गद्यकाव्य कादम्बरी (कथामुख) (भाग)

चतुर्थ पत्र

⑥ ~~प्र [illegible]~~ खण्ड ख / अनिवार्य प्रश्न

प्रश्नः – 'कादम्बरीरसज्ञानमाहारोऽपि न रोचते" की समीक्षा कीजिये अथवा कादम्बरी के आधार पर बाणभट्ट की समीक्षा करें, अथवा 'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्" की व्याख्या करें (10)

उत्तरम् :– महाकवि बाणभट्ट संस्कृत गद्य काव्य के उद्भट्ट विद्वान् हैं। बाणभट्ट की तीन रचनाएँ प्राप्त होते हैं (I) हर्षचरित (II) कादम्बरी (III) चण्डीशतक कुछ आलोचक चण्डीशतक को बाण की रचना स्वीकार नहीं करते हैं फिर भी इतना तो ~~निर्विव~~ निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि हर्षचरित और कादम्बरी गद्य साहित्य के आकाश में दो नक्षत्र हैं।

बाणभट्ट सम्राट हर्ष के दरबारी कवि थे। हर्ष का समय 606 से 647 ई. तक माना गया है, अतः बाणभट्ट का समय छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध तथा सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध निश्चित होता है। हर्ष के दरबार में रहकर हर्षचरित की रचना की जिसमें राजा हर्ष के जीवनवृतान्त के साथ-अपने वंश का भी उल्लेख किया है।

कादम्बरी बाणभट्ट की अंतिम अमर रचना है जिसमें बाण की कला का चूड़ान्त निदर्शन है। यह रोमानी प्रेम भावना से ओत-प्रोत एक ऐसी कथा है जिसमें संसार में विद्यमान सभी रसों का पूर्णतः परिपाक दिखाई पड़ता है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति इस कादम्बरी कथा का एक बार अध्ययन कर लेता है →

Scanned with CamScanner

उसे कुछ भी नहीं सुहाता है का मतलब है. कादम्बरी की कथा मदिरा के समान है। जैसे मदिरापान से व्यक्ति मदमस्त होकर ब्रह्मानंद सहोदर में डुबकी लगाते हैं, ठीक उसी प्रकार कादम्बरी की कथा का रसपान करके उसे कोई दूसरा आहार ही अच्छा नहीं लगता :-

"कादम्बरीरसज्ञानमाहारोऽपि न रोचते।"

कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है। इस कथा में बाणभट्ट की सूक्ष्म प्रतिभा का दर्शन होता है। कादम्बरी कथा का मूलस्रोत गुणाढ्यकृत बृहत्कथा है जो पैशाची भाषा में लिखा हुआ है [illegible] सोमदेवकृत कथासरित्सागर से भी सम्बन्ध रखता है।

जिस तरह भरपेट भोजन किये बिना [illegible] की तृप्ति नहीं मिलती उसी प्रकार कादम्बरी कथा के [illegible] कथा का श्रवण-मनन किये बिना कादम्बरी की विशेषताएँ परिलक्षित नहीं होती।

विदिशा नरेश शूद्रक की राज्यसभा में एक बार एक चाण्डाल कन्या आती है, और वैशम्पायन नामक तोता शूद्रक को देती है। तोता बड़ा विद्वान था, उसने आर्याछन्द में श्लोक पढ़ा। राजा आश्चर्यचकित हो उठे। राजा ने सारा वृत्तान्त सुनाने को कहा - तोता बोला - महाराज, विन्ध्याटवी में पम्पासर के पास एक विशाल शाल्मली का वृक्ष है। वहीं मेरे माता पिता रहते थे। जन्म के तुरन्त बाद मेरी माता चल बसी। मेरा लालन पालन मेरे पिता ने किया। एकदिन एक भील आया। उसके वृक्ष के सभी तोतों को घसीट-२ बाहर फेंकना शुरु किया। मैं भी उसी के साथ फेंका गया

किसी तरह बचते हुए वृक्ष की ओट में जा छिपा, इतने में जाबालि का पुत्र हारीत आता है। मुझे पानी पिलाकर वे अपने आश्रम में ले आये, वहाँ जाबालि ऋषि मुझे देखकर हँसने लगे और कहाँ यह तोता अपने पूर्वजन्म का फल भोग रहा है। यह सुनकर हारीत और ऋषिगण उत्सुक होकर मेरे पूर्व जन्मों की कहानी को सुनाने का अनुरोध करते हैं, आगे जाबालि कहते हैं -

उज्जयिनी नाम की एक नगरी थी। वहाँ तारापीड़ नामक राजा रहता था, उसकी रानी विलासवती थी और मंत्री का नाम शुकनास था। कुछ दिन के बाद राजा को चन्द्रापीड़ नामक पुत्र हुआ, उसी दिन शुकनास को भी वैशम्पायन नामक पुत्र हुआ। दोनों बड़े होने पर घनिष्ठ मित्र बने और राज्याभिषेक के बाद दिग्विजय के लिये निकल पड़े। इसी क्रम में अच्छोद सरोवर के पास पहुँचे, वहाँ एक तरुणी भक्ति में लीन बैठी थी और रो भी रही थी, तब चन्द्रापीड़ ने पूछा क्यों रोती हो? तरुणी ने कहा कोई नहीं रखता है, वह कहानी सुनाने लगी - मैं गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता हूँ। एक दिन मैं पुंडरीक पर आसक्त हो गयी। दोनों एक दूसरे को बहुत चाहने लगे इसी बीच मैं घर से आयी तब तक काम से पीड़ित पुंडरीक दम तोड़ चुका था। बाणभट्ट भी अपना दम कथा के बीच तोड़ देते हैं। कथा का पूर्वार्द्ध भाग बाणभट्ट ने तथा उत्तरार्ध भाग उसके पुत्र भूषणभट्ट ने पूरा किया। अंत में किस तरह से तोता और राजा शूद्रक अपने जन्म वृतान्त को जानता है, वह अत्यन्त ही कल्पनीय और सरस है।

कहा जाता है कि जब

Scanned with CamScanner

एक बार सभी आलोचक एकत्रित हुए और संस्कृत के सभी गद्यकारों की रचनाओं का सूक्ष्म अध्ययन किये तो पाया कि जितने भी गद्यकार हैं कोई न कोई रूप में बाणभट्ट से प्रभावित हैं। चाहे अलंकारों के प्रयोग में अथवा भाषा-भाव गाम्भीर्य में। सभों ने बाण की रचनाओं से कादम्बरी को ग्रहण किये हैं। अतः आलोचकों के मुख से यह सूक्ति निकल पड़ी -

"बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।"

अर्थात् यह जगत बाण का उच्छिष्ट है। का मतलब है सम्पूर्ण जगत बाणभट्ट का जूठा है। संस्कृत का कोई ऐसा गद्यकार नहीं जिन्होंने बाण से प्रेरणा न ली हो, अतः समीक्षकों ने ऐसा कहा। और फिर कादम्बरी को पढ़ने के बाद मन्त्र मुग्ध होकर किसी और सहृदय पाठक को अपने भावों में डुबो देता है। यही कारण है कि आलोचकों को यहाँ तक कहना पड़ा -

"कादम्बरी रसभरेण समस्त एवं मत्तो -
न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।"

गद्यरचना काव्य की कसौटी मानी गई है, पद्यरचना आसान है परन्तु गद्यरचना थोड़ा कठिन है, कारण इसमें कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ता है जिसके लिये एक सीमा निर्धारित की गई है -

"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।"

बाणभट्ट इस कसौटी पर खड़े उतरते हैं, फलतः आलोचक को मजबूर होकर कहना पड़ा -

"बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।"

चतुर्थ पत्र

(5) ~~[illegible]~~ खण्ड (क) अनिवार्य प्रश्न

प्रश्न :- दण्डिनः पदलालित्यम् के आलोक में दण्डी के गद्य-शैली की समीक्षा कीजिये या "दशकुमारचरितम् संस्कृत गद्य साहित्य की एक उच्चकोटि का गद्यकाव्य है" समीक्षा करें (60)

उत्तरम् :- महाकवि दण्डी संस्कृत गद्य साहित्य के एक महान् गद्यकार माने जाते हैं। दण्डी के जीवन के विषय में विशेष जानकारी नहीं है। अक्सर संस्कृत के कवियों ने अपना परिचय नहीं दिया है, अतः इनके विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है परन्तु कृतियों के बारे में उतना विवाद नहीं होता जितना जन्मादि के विषय में। महाकवि दण्डी की तीन रचनायें हैं- काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा तथा दशकुमारचरितम्। इसके समर्थन में शार्ङ्गधरपद्धति में इस तरह का श्लोक साक्ष्य के रूप में उपस्थित होता है-

त्रयोऽग्नयस्त्रयो वेदास्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः॥

दण्डी का वास्तविक नाम क्या था, यह स्पष्ट नहीं है, किन्तु दशकुमारचरित के मंगलाचरण में बार-बार दण्ड शब्द के प्रयोग को देखकर किसी विद्वान् ने उन्हें दण्डी ऐसा नामकरण कर दिया -

ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवनाम्भोरुहो नालदण्डः,
क्षोणीनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः।
ज्योतिश्चक्राक्षदण्डस्त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डोऽङ्घ्रिदण्डः
श्रेयस्त्रैविक्रमस्ते वितरतु विबुधद्वेषिणां कालदण्डः॥

इसके आधार पर कहा जा सकता है कि दण्डी कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण थे और प्रकाण्ड विद्वान् थे। दशकुमारचरित दण्डी की अनुपम रचना है। दशकुमारचरित दो पीठिकाओं में विभक्त है- पूर्वपीठिका तथा उत्तरपीठिका तथा आठ उच्छ्वासों में यह विभक्त है। इसमें दश-कुमारों की उत्पत्ति का वर्णन यथार्थ रूप में हुआ है। पूर्वपीठिका के प्रथमोच्छ्वास में पुष्पपुरी में राजहंस तथा उसकी पत्नी वसुमती का वर्णन है।

"अस्ति समस्तनगरीनिकषाय - - - -
- - - - मगध देशशेखरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी।"

राजहंस के [illegible] नाम का एक पुत्ररत्न है, वह [illegible] में [illegible] देव के समान सुन्दर है। अब वह जययात्रा के लिए तैयार है। यमक अलंकार के माध्यम से अपनी पदलालित्य का प[illegible] [illegible] दिया है।

"कुमारा[illegible]माराभिघपौरुषारुषा-
भस्मीकृतार[illegible]योपहसितसमीरणारणा-
भियातेन [illegible] ताभ्युद्याशंसराजानमकार्षुः।"

वास्तव में [illegible] सुगम एवं मनोरम गद्य शैली के निर्माता हैं। दण्डी की शैली प्रसादगुण शैली है। शब्द और अर्थ उनके इशारे पर चलते हैं, फलतः शब्द एवं पद प्रयोग से वर्ण्य विषय लालित्यपूर्ण हो जाता है। रानी वसुमती का वर्णन ललित पदों में हुआ है-

"तस्य वसुमती नाम सुमती लीलावती
कुलशेखरमणिरमणी बभूव।"

इनके वाक्य प्रायः लघु, भावानुरूप और ललित होते हैं। शब्दों का यह सुन्दर प्रयोग

PANINI CLASSES

लालित्य और रसाभिव्यक्ति में पूर्ण सहयोग प्रदान करता है। दण्डी का भाषा शैली पर असामान्य अधिकार है। दण्डी सदा शब्द आडम्बर से दूर रहता है अतः उसकी वाक्य-योजना प्रायः सुन्दर और स्वभाविक होती है। सूर्योदय के वर्णन में कवि ने उत्प्रेक्षा के माध्यम से गद्य शैली का परिचय दिया है-

"चिन्तयत्येव मयि महार्णवोन्मग्नमार्तण्ड-
तुरंगमश्वासरयावधूतेव व्यावर्तत त्रियामा।
समुद्रगर्भवासजडीकृत इव मन्दः प्रतापो-
दिवसकृतो [illegible] आसीत्।"

दण्डी की शैली विषयानुरूप परिवर्तनशील है। कथाधारा को निरन्तर धारावाहिक रूप में विकसित करने के लिये व्यास शैली का प्रयोग करते हैं। [illegible] शैली को चूर्णक शैली के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार की शैली में वाक्य अत्यन्त छोटे-छोटे होते [illegible]

[illegible] पर्वत नितम्बभागः।"

न केवल चूर्णक शैली अपितु मुक्तक शैली का भी प्रयोग करते हैं। मुक्तक शैली में लम्बे-लम्बे समासों से युक्त दीर्घवाक्य होते हैं। पञ्चमोच्छ्वास के प्रारम्भ में बसंत ऋतु के वर्णन में इसी तरह के लम्बे-2 वाक्यों का प्रयोग करते हैं-

"अथ मीनकेतनसेनानायकेन मलयगिरि-
महीरुहनिरन्तरवासिभुजंगमभुक्तावशिष्टे-
नेव - - - - - - -
वसन्तसमयः
समाजगाम।"

दण्डी के गद्य में शाश्वत सत्य को उद्घाटित करने वाली अनेक सूक्तियाँ उपलब्ध होते हैं। जैसे - जीवन दो चार दिनों का है -

"जीवितं हि नाम जन्मवतां चतुःपञ्चाण्यहानि।"

"स्वदेशो देशान्तरमिति नेयं गणना विदग्धस्य।"

अर्थात् "बुद्धिमान् पुरुष देश विदेश की गणना नहीं करते हैं" इस संसार में जो निरीह पुरुष है, लक्ष्मी उनका आश्रय नहीं करती -

"[illegible] नहि निरीहं -
देहिनं श्रियः संश्रयन्ते।"

इन्हीं समस्त विशेषताओं को लक्षित करके विश्वेश्वरनाथ शास्त्री ने लिखा है "पदार्थ की [illegible] भव्य भावों की अभिव्यक्ति, कोमल कल्पना की [illegible]यता, विचार वैशिष्ट्य गद्यकाव्य की विशेषताएँ हैं -- दशकुमारचरित इन सभी विशेषताओं पर खरे उतरते हैं, अतः यह निश्चय ही संस्कृत गद्य साहित्य की एक उच्चकोटि का गद्यकाव्य है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दण्डी के गद्यकाव्य में शब्दयोजना सौष्ठव, अनुप्रास का लालित्य, चमत्कारपूर्ण पदावली विद्यमान है इसी ललितपदावली को देखकर आलोचकों के मुख से यह उक्ति अनायास निकल पड़ी -

"दण्डिनः पदलालित्यम्।"

PANINI CLASSES